

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की स्थिति

प्रलम्ब के लिये:

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, भारतनेट, सामान्य सेवा केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (DDUGJY), भारतनेट परियोजना, MUDRA, SFURTI, स्टार्ट-अप इंडिया, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY), स्मार्ट सर्टिज मशिन, AMRUT, रूरबन मशिन, eNAM, उत्पादन संबंध प्रोत्साहन (PLI) योजना

मेन्स के लिये:

ग्रामीण अर्थव्यवस्था की स्थिति, ग्रामीण वनिरिमाण को बढ़ावा देने के लिये पहल, ग्रामीण वनिरिमाण से संबंधित चुनौतियाँ और आगे की राह, ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिला स्वामित्व वाले गैर-कृषि उद्यमों की भूमिका, ग्रामीण भारत से संबंधित प्रमुख चुनौतियाँ।

स्रोत: इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली

चर्चा में क्यों?

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था गरीबी, बेरोज़गारी और कृषि संकट सहित कई चुनौतियों का सामना कर रही है। इन मुद्दों को हल करने के लिये ग्रामीण औद्योगिकरण पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता (वर्षों से महिलाओं के स्वामित्व वाले गैर-कृषि उद्यमों पर) है।

- ऐसे उद्यमों के वसतिार से सकल घरेलू उत्पाद की संवृद्धि के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में (वर्षों से महिलाओं के लिये) रोज़गार के अवसरों में सुधार हो सकता है।

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की क्या स्थिति है?

- ग्रामीण जनसांख्यिकी:
 - जनगणना 2011 के अनुसार, भारत की 68.85% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है और नीति आयोग का अनुमान है कि वर्ष 2045 में भी यह आँकड़ा 50% से अधिक (जो देश के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में ग्रामीण भारत के महत्त्व को दर्शाता है) रहेगा।
- रहन-सहन का स्तर:
 - जनगणना 2011 के अनुसार, लगभग 39% ग्रामीण परिवार एक कमरे वाले आवास में रहते हैं, तथा केवल 53.2% के पास वदियुत् की सुवधि है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह सुवधि 92.7% है।
 - 86% ग्रामीण परिवारों द्वारा खाना पकाने के लिये लकड़ी जैसे पारंपरिक ईंधन का उपयोग किया जाता था, तथा केवल 30.8% परिवारों के पास नल के जल की सुवधि थी, जिससे बुनियादी ढाँचे और सुवधियों में चुनौतियों पर प्रकाश पड़ता है।
- ग्रामीण गरीबी:
 - तंदुलकर वधि से पता चलता है कि वर्ष 2004-05 में ग्रामीण गरीबी 41.8% के स्तर पर चर्तितजनक रूप से उच्च थी, जो वर्ष 2011-12 में घटकर लगभग 25% हो गयी।
 - हालाँकि, वर्ष 2011-12 में 6 राज्यों में गरीबी अनुपात अभी भी 35% से अधिक था।
 - ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति वयक्ति मासिक उपभोग व्यय (MPCE) शहरी स्तरों की तुलना में काफी कम है, जो सीमति उपभोग क्षमता और तीव्र गरीबी को दर्शाता है।
- रोज़गार:
 - PLFS रिपोर्ट 2023-24 में बताया गया है कि ग्रामीण रोज़गार मुख्य रूप से स्वरोज़गार (53.5%) और आकस्मिक शर्म (25.6%) की वशिषता है।
 - ग्रामीण शर्मिकों का एक महत्त्वपूर्ण हसिसा (58.4%) कृषि में लगा हुआ है (जो मौसमी रोज़गार प्रदान करता है)।
 - ग्रामीण क्षेत्रों में वेतनभोगी नौकरियाँ कुल कार्यबल का केवल 12% हैं, तथा इनमें से अधिकांश पदों पर अनुबंध, सवेतन अवकाश और नौकरी की सुरक्षा का अभाव है।
 - ILO की भारत रोज़गार रिपोर्ट 2024 से पता चलता है कि शक्ति युवाओं में बेरोज़गारी 2000 में 35.2% से लगभग दोगुनी होकर वर्ष 2022 में 65.7% हो गई है, जिसमें महिलाओं (76.7%) को पुरुषों (62.2%) की तुलना में अधिक बेरोज़गारी का सामना करना पड़ रहा है।

- वर्ष 2017-18 से वर्ष 2023-24 तक, भारत में 150 मिलियन नौकरियाँ जुड़ी, जसिमें ग्रामीण महिलाओं ने इस वृद्धि में 54% योगदान दिया, वशिष रूप से कृषि में।
 - वर्ष 2023-24 में ग्रामीण महिला कार्यबल भागीदारी 12.5% बढ़कर 34.8% हो गई।

■ कृषिसंकट:

- छोटे और सीमांत किसान, जो कृषि आबादी का 86% हसिसा हैं, के पास केवल 43% कृषि भूमि है, जबकि आर्थिक जोत वाले बड़े किसान 53% भूमिका प्रबंधन करते हैं।
- कृषि मजदूर, जो भूसवामयियों की तुलना में ग्रामीण कार्यबल का बड़ा हसिसा हैं, उन्हें मौसमी काम, कम मजदूरी और चकितिसा सहायता और पेंशन सहति सामाजिक सुरक्षा उपायों की कमी का सामना करना पड़ता है।

भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिये क्या कदम उठाए गए हैं?

■ बुनियादी ढाँचा विकास:

- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY),
- भारतनेट परियोजना
- दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (DDUGJY) ने ग्रामीण वदियुतीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका नभिाई है, जसिसे 18,000 से अधिक गाँवों में बजिली आपूर्ति प्रदान की है और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मलिया है।

■ MSME के लिये सहायता:

- माइक्रो युनटिस डेवलपमेंट एंड रफाइनेंस एजेंसी लिमिटेड (MUDRA)
- MSME के लिये ऋण गारंटी योजना (CGTMSE)
- सफूर्ति (पारंपरिक उद्योगों के पुनरुद्धार के लिये नधिियोजना)

■ ग्रामीण उद्यमिता और रोजगार को बढ़ावा देना:

- स्टार्ट-अप इंडिया पहल
- स्टैंड-अप इंडिया योजना
- दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना
- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना
- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मशिन

■ ग्रामीण-शहरी संबंधों को मजबूत करना

- श्यामा प्रसाद मुखरजी रूरबन मशिन (SPMRM)
- ई-नाम मंच

■ ग्रामीण वनिरिमाण के लिये नीतगित रूपरेखा:

- एक जिला एक उत्पाद (ODOP)



भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्था के समक्ष क्या चुनौतियाँ हैं?

- वनिरिमाण क्षेत्र में स्थरिता: भारत के वनिरिमाण क्षेत्र में स्थरिता आई है, जो वर्ष 2023 में सकल घरेलू उत्पाद में केवल 15% का योगदान देगा, जो वर्ष 2014-15 में 16.1% से कम है।
- स्थानिक नधियोजन चुनौती: भारत में कृषिसे वनिरिमाण की ओर बदलाव धीमा और असमान रहा है, यहाँ 40% से अधिक कार्यबल अभी भी कृषि में कार्यरत है, जबकि चीन में यह 20% और अमेरिका में 2% है।
- अवसंरचना संबंधी मुद्दे: भारत में वनिरिमाण के व-शहरीकरण ने संगठित वनिरिमाण को शहरी क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानांतरित कर दिया है, जसिसे लागत में कमी आई है, लेकिन अपर्याप्त ग्रामीण अवसंरचना के कारण विकास में बाधा उत्पन्न हुई है।
- छोटे शहर और ग्रामीण क्षेत्र भारत में आर्थिक विकास के इंजन के रूप में उभर रहे हैं, जहाँ शहरी आबादी का आधा से अधिक हसिसा रहता है, और अनुमान है कि वर्ष 2050 तक इसमें उल्लेखनीय वृद्धि होगी।
- नविश की चुनौतियाँ: ग्रामीण वनिरिमाण में नजिी नविश सीमति है। खराब भौतिक बुनियादी ढाँचा, वशिषसनीय भूमि अभलिखों की कमी और विकृत पूंजी बाजार जैसे कारक इस कम नविश में योगदान करते हैं।
- कुशल संसाधन आवंटन तंत्र के अभाव ने नए, अधिक कुशल उद्यमों के प्रवेश को प्रतर्बिधति कर दिया है।

भारत में ग्रामीण आर्थिक विकास को बढ़ावा देने हेतु क्या उपाय किये जा सकते हैं?

- बुनियादी ढाँचे में नविश: वनिरिमाण वृद्धि और आर्थिक विकास के लिये अनुकूल वातावरण बनाने हेतु सड़क, बजिली और दूरसंचार सहति ग्रामीण बुनियादी ढाँचे में महत्त्वपूर्ण नविश आवश्यक है।
- MSMEs को बढ़ावा देना: नीतियों को ऋण, भूमि और कौशल विकास कार्यक्रमों तक आसान पहुँच सुनिश्चित करके सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) को सशक्त बनाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये।
 - MSMEs को प्रोत्साहति करने से उद्यमशीलता को बढ़ावा मलिया और रोजगार सृजति होंगे, वशिष रूप से वे रोजगार जो ग्रामीण आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।
 - संतुलित क्षेत्रीय विकास और शहरी-ग्रामीण असमानताओं को कम करने के लिये छोटे शहरों को औद्योगिक केंद्रों के रूप में विकसित

करने की दशा में नीतगित बदलाव महत्त्वपूर्ण है।

- **कौशल विकास पर ध्यान:** ग्रामीण कार्यबल, विशेष रूप से गैर-कृषि क्षेत्रों में, की रोजगार क्षमता को बढ़ाने के लिये **कौशल विकास कार्यक्रमों को उद्योग की जरूरतों के अनुरूप बनाया जाना चाहिये**।
 - इससे यह सुनिश्चित होगा कि वे ग्रामीण औद्योगिकीकरण से उत्पन्न संभावनाओं के लिये तैयार हैं।
- **महिला स्वामित्व वाली गैर-कृषि उद्यम को बढ़ावा देना:** ये उद्यम उद्यम, आय में वविधिता और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिये आर्थिक विकास में योगदान करते हैं।
 - भारत को 2030 तक 8% की **सकल घरेलू उत्पाद** वृद्धिदर हासिल करने के लिये, नव सृजति रोजगार में आधे से अधिक महिलाएँ शामिल होना चाहिये।
 - इन उद्यमों को औपचारिक बनाना और व्यावसायिक क्षेत्र ऋण के माध्यम से लक्ष्य व्यवसाय एवं वित्तीय सहायता प्रदान करना महत्त्वपूर्ण है।
- **डजिटल अवसंरचना में वृद्धि:** ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट रीच और मोबाइल कनेक्टिविटी सहित डजिटल अवसंरचना का वसितार करने से गैर-कृषि क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी शामिल होगी।
 - इससे महिलाओं को बेहतर वित्तीय पहुँच और कुशल व्यवसाय प्रबंधन के लिये **फनिटेक समाधानों का लाभ उठाने** में मदद मिलेगी।

दृष्टिमुख्य परीक्षा प्रश्न:

भारत के ग्रामीण उद्योग की स्थितिपर चर्चा कीजिये और ग्रामीण उद्योग के समाधान के लिये आने वाली योजना पर चर्चा कीजिये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न: नमिनलखिति में से कौन-सा/से संस्थान अनुदान/प्रत्यक्ष ऋण सहायता प्रदान करता/करते है/हैं? (2013)

1. क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
2. राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक
3. भूमि विकास बैंक

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: C

प्रश्न 2. नमिनलखिति में से कौन "महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम" से लाभ पाने के पात्र हैं? (वर्ष 2011)

- (A) केवल अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के परिवारों के वयस्क सदस्य
- (B) गरीबी रेखा से नीचे (BPL) परिवारों के वयस्क सदस्य
- (C) सभी पछिड़े समुदायों के परिवारों के वयस्क सदस्य
- (D) किसी भी घर के वयस्क सदस्य

उत्तर: (D)